Bhairavi
भैरवी

ISSN No. 0975-5217
(UGC-CARE Listed Group-I)

राजस्थानी भाषा के उन्नयन व विकास में कन्हैया लाल सेठिया का योगदान

चंदा कुमावत
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर, शिक्षा विभाग
kumawatchanchal1990@gmail.com

सारांश

राजस्थानी भाषा में कन्हैयालाल सेठिया का विशेष योगदान रहा है कन्हैयालाल सेठिया राजस्थानी भाषा के महान रचनाकार होने के साथ साथ वो एक सफल स्वतंत्रता सेनानी भी थे और एक गीतकार भी इसलिये इन्होने' धरती धोरा री' गीत की रचना की श्री कन्हैयालाल सेठिया उल्लेखनीय कृतियाँ है रमणियां रा सोरठा -:, गळगचिया , मींझर , कूंकंऊ , लीलटांस , धर कूंचा धर मंजळां , मायड़ रो हेलो , सबद , सतवाणी , अघरीकाळ , दीठ , क क्को कोड रो , । आपको 2004 में पद्मश्री, साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 1988 में ज्ञानपीठ के मूर्तिदेवी साहित्य पुरास्कार से भी सम्मानित किया गया है।

सेठिया जी द्वारा रचित राजस्थानी गीत 'धरती धोरां री !' राजस्थान का वंदना गीत बन चुका है। राजस्थान का सरस, गौरवशाली वर्णन करने वाले इस गीत के बोल हर राजस्थानी के मन में प्रदेश के गौरव एवं स्वाभिमान को जगाते हैं। गीत में प्रयुक्त अलंकारिक भाषा, भाव, कल्पना, रस -- इन सब में गौरव छलकता है। राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक पहचान को देश-विदेश में पहुंचाने में इस गीत की ख़ास भूमिका रही है।

- राजस्थानी भाषा में रचे इस अमर काव्य की पंक्तियां जब भी कानों को सुनाई देती है, राजस्थानी काव्य के भीष्म पितामह, स्व. कन्हैया लाल सेठिया का स्मरण हो आता है। सेठिया जी की यह कविता राजस्थान में सर्वाधिक बार पढ़ी व गायी जाने वाली रचनाओं में से एक है। ये शब्द सेठिया जी की देशप्रेम व स्वाभिमान से ओतप्रोत वीररस की कविता "पीथल व पाथल" से है। इस कविता को पढ़ने के बाद पाषण हृदय वाला कायर भी मातृभूमि की आन बचाने के लिए मचल उठता है।

- उक्त दोनों रचनाएं, दशकों से राजस्थान के विविध शैक्षणिक पाठयक्रमों का अनिवार्य हिस्सा है।

- यद्यपि सेठिया जी ने साहित्य की कई विधाओं में अनेक रचनाएं रची है, तथापि अगर वे उक्त दो कविताएं मात्र रचते, तो भी उनका नाम राजस्थानी के अमर साहित्यकारों में शामिल होता।

सेठिया जी द्वारा रचित राजस्थानी गीत 'धरती धोरां री !' राजस्थान का वंदना गीत बन चुका है। राजस्थान का सरस, गौरवशाली वर्णन करने वाले इस गीत के बोल हर राजस्थानी के मन में प्रदेश के गौरव एवं स्वाभिमान को जगाते हैं। गीत में प्रयुक्त अलंकारिक भाषा, भाव, कल्पना, रस -- इन सब में गौरव छलकता है। राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक पहचान को देश-विदेश में पहुंचाने में इस गीत की ख़ास भूमिका रही है।

प्रस्तावना

राजस्थानी भाषा के विकास में राजस्थान के गौरव के उत्थान में कन्हैयालाल सेठिया के समग्र साहित्य में मूल्य बोध है उनका व्यक्तिगत चिन्तन यथार्थवादी था | सत्य को वे करीब से महसूस करते थे कवि को कन्हैयालाल सेठिया अनुभूति का माध्यम मात्र मानते थे | उनके रोम –रोम में विराजमान था तो कविवर सेठिया ने कवियों को उदेश्य युक्त रचनाओं के सर्जन की ओर

ISSN No. 0975-5217
(UGC-CARE Listed Group-I)

प्रेरित किया है | कन्हैया जी रचनाओ में ऐसा ही मानव बसता है जिसमें सिन्धु में बिंदु की तरह समाहित है| संत कबीर को ,जो उनके इष्ट है वह निरक्षर होते हुए भी चिन्तन अक्षर है ,नीर-क्षीर का विवेकी है |

जन्म : 11 सितम्बर 1919 ई॰ को सुजानगढ़ (राजस्थान) में

पिता-माता : स्वर्गीय छगनमलजी सेठिया एवं मनोहरी देवी

विवाह : 1937 ई॰ में श्रीमती धापू देवी के साथ सन्तान : दो पुत्र - जयप्रकाश एवं विनयप्रकाश पुत्री श्रीमती सम्पत देवी दूगड़

अध्ययन : बी॰ए॰

निधन : 11 नवम्बर 2008

कन्हैयालाल सेठिया का जन्म राजस्थानके चूरु जिले के सुजानगढ़ शहर में हुआ। प्रसिद्ध राजस्थानी गीत आ तो सुरगा नै सरमावै इन्हीं की रचना है। 11 नवम्बर 2008 को निधन हो गया |

मुख्य शब्द -: मायड , सुरागा, रमणीय , राजस्थान, पीथल व पाथल, डिंगल

राजस्थानी भाषा के उत्थान में योगदान- *राजस्थान* भाषा की विकास यात्रा कन्हैयालाल सेठिया के से समय से ही नहीं प्रारम्भ हुई बल्कि सीताराम लालस राजस्थानी भाषा के आधुनिक काल के प्रसिद्ध विद्वान रहे है। राजस्थानी साहित्य में सीताराम लालस की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि राजस्थानी शब्दकोश का निर्माणहै। डिंगल कोई भाषा नही है बल्कि मारवाड़ी की ही साहित्यिक शैली है। डिंगल भाषा की प्रमुख विशेषता है कि इसमे जो शब्द जिस तरह बोला जाता है उसी तरह लिखा जाता है।डिंगल भाषा का सर्वप्रथम प्रयोग कुशललाभ द्वारा रचितपिंगलशिरोमणि नामक ग्रंथ में किया गया। राजस्थान में चारण कवि बांकीदास और सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपनी रचनाओं में डिंगल भाषा का प्रयोग ठिया जी ने देश की स्वतंत्रता आंदोलन में भी बढ़चढ़ कर भाग लिया । सेठिया जी, बीकानेर में आजादी की भावना लोगो में जागृत करने व राजशाही के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने वाले संगठन "बीकानेर प्रजामंडल" के सदस्य भी रहे । आप महात्मा गांधी जी व उनकी विचारधारा से प्रभावित थे । गांधी जी प्रेरणा से आपने खादी के प्रचार व दलित उद्धार की दिशा में भी कार्य किया । सेठिया जी ने राजस्थानी के अलावा हिन्दी में अठारह व उर्दु भाषा में दो पुस्तकों की रचनाएं की लीलटांस, रमणिंया रां सोरठा, धर कूंचा धर मंजला, सतवाणी, गळगचिया, मायड़ रो हेलो, मींझर, कूंकंऊ, हेमाण राजस्थानी भाषा में लिखी रचनाएं है ।हिन्दी भाषा में लिखी कृतियों में शामिल है- मेरा युग, आज हिमालय बोला, प्रणाम, वनफूल, दीप किरण, अग्निवीणा, खुली खिड़कियां चौड़े रास्ते, प्रतिबिम्ब, अनाम, मर्म, वामन, श्रेयस, स्वागत, देह-विदेह, त्रयी, निष्पति व निर्ग्रन्थ ।गुलची व ताजमहल शीर्षक से उर्दु भाषा में रचनाएं रची । सेठिया जी की रचनाओं का अंग्रेजी, बंगाली, मराठी व हिन्दी भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है ।

ISSN No. 0975-5217
(UGC-CARE Listed Group-I)

सेठिया जी की प्रसिद्ध कविता धरती धोरा पर अन्तरराष्ट्रीय ख्याती प्राप्त फिल्म निर्माता गौतम घोष द्वारा "Land of the sand dunes" शीर्षक से वृतचित्र का निर्माण किया गया जिसको भारत सरकार द्वारा स्वर्णकमल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कन्हैया लाल सेठिया को अनेक राज्य व राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनमें से प्रमुख है. पदमश्री पुरस्कार- वर्ष 2004 वर्ष 1976 में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा उनकी राजस्थानी काव्यकृति "लीलटांस" को सर्वश्रेष्ठ राजस्थानी कृति के रूप में पुरस्कृत किया गया।वर्ष 1980 में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा हिन्दी काव्यकृति "निर्ग्रन्थ" को मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया।1983 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा साहित्यवाचस्पति उपाधि से अलंकृत किया गया।1992 में राजस्थान सरकार द्वारा स्वतंत्रता सेनानी का तामपत्र प्रदान किया गया।. मार्च, 2013 को मृत्यु उपरान्त राजस्थान रत्न सम्मान प्रदान किया गया।श्री कन्हैया लाल सेठिया ने राजस्थानी भाषा में रचे बसे मिठास से न केवल राजस्थान अपितु पूरे भारतवर्ष को परिचित करवाया। समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी व राजस्थानी भाषा के इस सपूत का 11 नवम्बर, 2008 को निधन हुआ।

राजस्थानी भाषा के उद्देश्य -

- राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति के उन्नयन, संवर्द्धन एवं संरक्षण के लिए प्रयत्न करना।
- राजस्थानी भाषा के साहित्यकारों और लेखकों में आपसी सहयोग की अभिवृद्धि के लिए प्रयत्न करना।
- उच्च स्तरीय ग्रंथो, पत्र-पत्रिकाओं, कोश, विश्वकोश, आधारभूत शब्दावली, ग्रंथ व सूचीकरण आदि के सृजन में सहायक |
- विश्व भाषाओं के उत्कृष्ट का राजस्थानी भाषा में तथा राजस्थानी के उत्कृष्ट साहित्य का विश्वभाषाओं में अनुवाद करना तथा ऐसे अनुवाद कार्यों को प्रोत्साहित करना।
- साहित्यिक सम्मेलन, विचार संगोष्ठियां, परिसंवाद एवं साहित्य, भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार की अन्य योजनाएं आदि की व्यवस्था करना।
- राजस्थानी भाषा, साहित्य के साहित्यकारों को उनकी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए पुरस्कृत करना एवं श्रेष्ठ साहित्यकारों को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए सम्मानित करना।
- सृजन, अनुवाद, साहित्यिक शोध व आलोचनात्मक अध्ययन संबंधी प्रोजेक्ट, भाषा वैज्ञानिक एवं साहित्यिक करवाना |
- भाषा साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत साहित्यकारों को वित्तीय सहायता, शोधवृत्तियां आदि देना।
- अनुसंधान शाखा सहित साहित्यिक पुस्तकालय तथा अध्ययन केन्द्र स्थापित करना और इस प्रवृत्ति के विकास के लिए वित्तीय सहयोग देना।
- जनता, व्यक्तियों और संस्थाओं से वस्तु और मुद्रा के रूप में आर्थिक सहयोग प्राप्त करना तथा सरकारी या अर्द्धसरकारी निकायों से अनुदान एवं अन्य सहयोग प्राप्त करना।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

ISSN No. 0975-5217
(UGC-CARE Listed Group-I)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य का इतिहास
https://www.google.co.in
https://hi.wikipedia.org › *wiki* › *कन्हैयालाल_सेठ.*
'लीलटांस' के लिए राजस्थानी *में*साहित्य अकादमी, 'सबद' काव्य-संग्रह के लिए
https://www.drishtiias.com राजस्थान , भारत एवं विश्व का इतिहास
राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति – आशीर्वाद पब्लिकेशन
प्राचीन लिपिमाला, राजपुताने का इतिहास (पं. गौरीशंकर हीराचंद ओझा) :
https://pdfdownload.in
http://assests.voou.ac.in राजस्थानी भाषा अर साहित्य रो इतिहास